जोखु ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई । गंगी से बोला – यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी *पिलाए देती है*।

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी । कुआं दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था ! कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिल्कुल न थी । आज पानी से बदबू कैसा ! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी । ज़रूर कोई जानवर कुएं में गिरकर मर गया होगा । मगर दूसरा पानी आवे कहां से ?

ठाकुर के कुएं पर कौन चढ़ने देगा ? दूर से लोग डांट बताएंगे । साहू का कुआं गांव के उस सिरे पर है, परन्तु वहां भी कौन पानी भरने देगा ? कोई कुआं गांव में है नहीं ।

जोखू कई दिनों से बीमार है । कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला – अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जता । ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूं ।

गंगी ने पानी न दिया । खराब पानी पीने से बीमार बढ़ जाएगी, इतना जानती थी; परन्तु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है । बोली – यह कैसे पियोगे ? न जाने कौन जानवर मरा है । कुएं से मैं दूसरा पानी *लाए देती हूँ*।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा – दूसरा पानी कहां से लाएगी ?

'ठाकुर और साहू के दो कुएं तो हैं । क्या एक लोटा पानी *न भरने देंगे* ?'

'हाथ-पांव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा । बैठ चुपके से । ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पांच लेंगे । गरीबी का दर्द कौन समझता है ! हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर (=द्वार, दरवाज़ा) पर झांकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है । ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे ?'

इन शब्दों से कड़वा सत्य था । गंगी क्या जवाब देती ; किन्तु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया ।

२

रात के नौ बजे थे । थके-मांदे मज़दूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाज़े पर दस-पांच बेफ़िक्रे जमा थे । मैदानी बहादुरी का तो न अब ज़माना रहा है, न मौका । क़ानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं । कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दे दी और साफ़ निकल गए । कितनी अकलमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नकल ले आए । नाजिर और मोहतिमिम सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती । कोई पचास मांगता, कोई सौ। यहां बे पैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी । काम करने का ढंग चाहिए ।

इसी समय गंगी कुएं से पानी लेने पहुंची ।

कुप्पी की धुंधली रोशनी कुएं पर आ रही थी । गंगी जगत की आड़ में *बैठी* मौके का इंतज़ार करने लगी । इस कुएं का पानी सारा गांव पीता है । किसी के लिए रोक नहीं; सिर्फ़ ये बदनसीब नहीं भर ससते ।

गंगी का विद्रोही दिल पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा – हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊंचे हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तगा डाल लेते हैं ? यहां तो जितने हैं, एक-से-एक छटे हैं । चोरी ये करें, जालफ़रेब ये करें, झुठे मुकदमे ये करें । अभी इस ठाकुर ने बेचारे गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद को मारकर खा गया । इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है । यही साहूजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं । काम करा लेते हैं । मजूरी देते नानी मरती है । किस-किस बात में हैं हमसे ऊंचे ? हां, मुंह से हमसे ऊंचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊंचे हैं, हम ऊंचे ! कभी गांव में आ जाती हूँ, तो रस भरी आंख से देखने लगते हैं । जैसे सब के छाती पर सांप लोटने लगता है, परन्तु घमण्ड यह कि हम ऊंचे हैं !

कुएं पर किसी के आने की आहट हुई । गंगी की छाती धक्-धक् करने लगी । कहीं देख ले तो गजब हो जाए । एक लात भी तो नीचे न पड़े । उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर *चलती हुई* एक वृक्ष के अंधरे साए में जा खड़ी हुई । कब इन लोगों को दया आती है किसी पर ! बेचारे महंगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा । इसलिए तो कि उसने बेगार न दी थी । इस पर ये लोग ऊंचे बनते हैं ?

कुएं पर दो स्त्रियां पानी भरने आई थीं । इनमें बातें हो रही थीं ।

'खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताजा पानी भर लाओ । घड़े के लिए पैसे नहीं हैं ।

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है ।'

'हां, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते । बस, हुक्म चला दिया कि ताज़ा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियां ही तो हैं ।'

'मत लजाओ, दीदी ! छिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है । इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती तो इससे कहीं आराम से रहती । ऊपर से वह एहसान मानता । यहां काम करते-करते मर जाओ, पर किसी ताक मुंह ही सीधा नहीं होता ।'

दोनों पानी भरकर चली गईं, तो गंगी बृक्ष की छाया से निकली और कुएं के जगत के पास आयी । बेफ़िक्रे चले गए थे । ठाकुर भी दरवाज़ा बन्द कर अन्दर आंगन में सोने जा रहे थे । गंगी ने क्षाणिक सुख की सांस ली । किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ । अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी ज़माने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया होगा । गंगी दबे पांव कुएं के जगत पर चढ़ी ।विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ ।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला । दाएं-बाएं चौकन्नी दृष्टि से देखा, जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के क़िले में सुराख कर रहा हो । अगर इस समय वह पकड़ ली गई तो फिर उसके लिए माफ़ी या रियायत की रत्तिभर उम्मीद नहीं । अन्त में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएं में डाल दिया ।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता । ज़रा भी आवाज़ न हुई । गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे । घड़ा कुएं के मुंह तक आ पहुंचा । कोई शहज़ोर पहलवान भी इतनी तेज़ी से उसे न खींच सकता था ।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया । शेर का मुंह इससे अधिक भयानक न होगा !

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई । रस्सी के साथ घड़ा धराम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हिलकोरे की आवाज़ें सुनाई देती रहीं ।

ठाकुर 'कौन है, कौन है ?' पुकारते हुए कुएं की तरफ़ जा रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी ।

घर पहुंचकर देखा कि जोखू लोटा मुंह से लगाए वही मैला गादा पानी पी रहा है ।

कंधा देना lit. donner l'épaule : aider à porter un palanquin ou une civière; मैदानी बहादुरी / क़ानूनी बहादुरी : opposition des exploits militaires (révolus) aux exploits juridiques (d'actualité, où excelle le thakur) ; कुप्पी outre à huile/lampe à huile ; बदनसीब infortuné (nasîb destinée, sort) ; विद्रोही rebelle ; छटा (= छंटा) choisi, ouvertement escroc : जालफ़रेब fraude ; गजब désastre terrible ; साए में = छाया में; coup ; कलसिया : pot à eau ; जगत (m) margelle ; आंगन (m) cour intérieure ; फंदा (m) nœud ; सुराख tunnel ; गोता (m) लगाना plonger ; धराम से brutalement/à grand bruit

1. D'où vient l'amertume de Jokhu (selon ses propres arguments) dans la première section ?
2. Quels reproches fait Gangi aux gens de haute caste (classez ses griefs dans sa progression à elle) ?
3. De quel milieu sont les deux femmes qui viennent puiser de l'eau ? de quoi se plaignent-elles ?
4. Quelles sont les comparaisons qui illustrent les émotions et les actions de Gangi ? sont-elles réalistes, originales, parlantes ?
5. A la fin Gangi : a) réussit à puiser de l'eau, b) ne réussit pas et rapporte sa cruche vide, c) repart sans rien

6. Relevez tous les sens qu'a *itnâ/itnî/itne* dans le texte, tous les sens qu'a kab
7. Relevez un présomptif que vous traduirez ; 8. commentez les formes verbales en italique
9. गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया : quels sont les divers sens et fonctions de *ki* dans cette phrase ? (servez-vous des temps-modes des verbes pour comprendre)

10. Comment sont présentées les paroles et les pensées des personnages (discours direct, indirect, etc.)